NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

M.H.D. -22

कबीर का विशेष अध्ययन

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Anjana Mehrish*, M.A., M.Phil. (Hindi)

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 320/-

Content

कबीर का विशेष अध्ययन

Question Paper—June-2024 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

कबीर का जीवन और युग

1. कबीर का जीवन और उनका साहित्य 1
2. कबीर का युग 8
3. निर्गुण भक्ति परम्परा और कबीर 15
4. गोरखनाथ, कबीर और तुलसीदास 30
5. गुरुग्रंथ साहिब और कबीर 41

कबीर का चिंतन

6. कबीर के दार्शनिक विचार 51
7. कबीर की कविता में दर्शन 65
8. कबीर की सामाजिक मान्यताएं 73
9. कबीर और धार्मिक रूढ़िवाद 83

कबीर की कला

10. कबीर की भाषा 94

11. कबीर काव्य में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दावली 106

12. कबीर के काव्य में छंद और अलंकार 116

13. कबीर की कविता में व्यंग्य 124

कबीर का मूल्यांकन और प्रासंगिकता

14. दलित विमर्श और कबीर 130

15. हिंदी आलोचना में कबीर 135

16. कबीर की कविताओं का विश्लेषण 149

17. कबीर और मानव मुक्ति की धारणा 155

18. कबीर का ऐतिहासिक अवदान 163

महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या **171**

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

कबीर का विशेष अध्ययन

M.H.D.-22

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) हम तुम मांहे एकै लोहू, एकै प्रान जीवन है मोहू।
एक ही बास रहै दस मासा, सूतक पातग
एकहि आसा।
एक ही जननी जन्यां संसारा,
कौन ग्यॉन थैं भये निनारा॥

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत पद संत कबीर द्वारा रचित है। इसमें कबीर ने भेदभाव करने वालों पर व्यंग्य किया है।

व्याख्या–वे कहते हैं कि हम सबमें एक लहू है, एक जैसे प्राण हैं, एक ही जैसी बास लेते हैं, सूतक-पातक भी एक समान है। एक ही जननी से संसार जन्मा है, तो वे कौन से ज्ञानी हैं, जो भेदभाव पैदा कर गये।

विशेष–1. भाषा व्यंग्यात्मक है।
2. समाज को बाँटने वालों को फटकार है।
3. अद्वैत दर्शन है।

(ख) चली है कुलबोरनी गंगा नहाय।
सतुवा कराइन बहुरी भुजाइन
घूघट ओटैं भसकत जाय।
पाँच पचीस कै धक्का खाइन
नौ मन मैल है लीन्ह चढ़ाय॥

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत पद कबीरदास द्वारा रचित है। इस पद में कबीर ने गंगा स्नान जाती स्त्रियों पर व्यंग्य किया है।

व्याख्या–वे कहते हैं कि कुलीन स्त्रियाँ गंगा स्नान को जा रही हैं। बहू, भाभी, कहारिन सब साथ-साथ घूँघट ओढ़े भागी जा रही हैं। वहाँ भीड़ में धक्के खाएँगी और कुछ रुपया-पैसा खर्च करके आएँगी। हर हाल में अपना नुकसान करेंगी।

विशेष–1. स्त्रियों संबंधी संकीर्ण विचारधारा है।
2. दूसरा पक्ष बाह्याचार की अपेक्षा कर्म पर बल देने का है।
3. भाषा व्यंग्यात्मक है।
4. लोकज्ञान की झलक है।

(ग) कहा नर गरवसि थोरी बात।
मन दस नाज, टका दस गँठिया, टेढौ टेढौ जात॥
कहा लै आयौ यहु धन कोऊ, कहा कोऊ लै जात।
दिवस चारि की है पतिसाही,
ज्यूं बनि हरियल पात॥
राज भयौ गाँव सौ पाये, टका लाख दस बात
रावन होत लंका को छत्रपति, पल मैं गई बिहात॥

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत पद में कबीर में संसार की क्षणभंगुरता, माया का मोह और झूठे घमंड में जीने वालों को फटकारा है।

व्याख्या–कबीर कहते हैं कि लोग थोड़ी-सी प्राप्ति पर ही गर्व करने लगते हैं। उनके पास दस मन अनाज और गाँठ में कुछ रुपये आ जाएं, तो अकड़कर चलने लगते हैं। कबीर पूछ रहे हैं कि यह धन तुम कहाँ से लाए थे और कहाँ लेकर जाओगे अर्थात् जो पाया, यहीं पाया और यहीं छूट जाएगा, रावण लंका का राजा था। धन वैभव सब कुछ था, किंतु एक पल में सब समाप्त हो गया।

विशेष–1. जीवन की असारता को समझाया गया है।
2. माया से मुक्ति का संदेश है।

(घ) संतौ भाई आई ग्यान की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ाँणी, माया रहै न बाँधी॥
हिति चित की द्वै थूँनी गिराँनी, मोह बलिंडा तूटा।
त्रिस्नाँ छाँनि परो घर ऊपरि,
कुबधि का भाँडा फूटा॥

उत्तर–संदर्भ–देखें–महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या, पृष्ठ-186, व्याख्या 25

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रश्न 2. भारतीय नवजागरण में कबीर चेतना की भूमिका का आकलन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-18, पृष्ठ-169, प्रश्न 2

प्रश्न 3. 'संधा भाषा' स्वरूप स्पष्ट कीजिए। कबीर की कविता में यह किस अर्थ और रूप में प्रस्तुत हुई है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-101, प्रश्न 2

प्रश्न 4. कबीर की कविता में धार्मिक बाह्याचारों के विरोध पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-88, प्रश्न 3

प्रश्न 5. कबीर की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-76, प्रश्न 1

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) कबीर की भाषा की काव्यात्मकता के स्रोत

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-102, प्रश्न 1

(ख) नारी के विषय में कबीर का दृष्टिकोण

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-76, 'नारी की स्थिति तथा कबीर का उसके प्रति दृष्टिकोण'

(ग) कबीर की भाषा का व्याकरणिक स्वरूप

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-94, 'कबीर की भाषा का व्याकरणिक स्वरूप'

(घ) कबीर की शास्त्रीयता बनाम लोक

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-131, 'कबीर की शास्त्रीयता बनाम लोक'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

कबीर का विशेष अध्ययन

कबीर का जीवन और युग

कबीर का जीवन और उनका साहित्य

1

परिचय

कबीर मध्ययुगीन हिंदी भक्ति काव्यधारा के महत्त्वपूर्ण कवि और संत थे। वे हिंदी साहित्य के भक्तिकालीन युग में ज्ञानाश्रयी-निर्गुण शाखा की काव्यधारा के प्रवर्तक थे। भक्तिकाल की सुदीर्घ परंपरा में कबीर उन महत्त्वपूर्ण कवियों में से हैं, जो आज भी प्रासंगिक है। कबीर प्रखर प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने परंपरा से बहुत कुछ ग्रहण करते हुए चिंतन के नये आयाम विकसित किये। उन्होंने 'कागद लेखी' की जगह 'आंखिन देखी' को अधिक महत्त्व दिया। कबीर जनसाधारण के सबसे लोकप्रिय कवियों में से थे, इसीलिए साधारण जनता की किंवदंतियों और जनश्रुतियों में उनकी स्मृति सुरक्षित है।

कबीर सच्चे भक्त, धर्मनिरपेक्ष चिंतक, सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों का घोर विरोध करने वाले कवि थे। जनसाधारण के हितों की रक्षा करना ही उनकी कविता का लक्ष्य था। आध्यात्मिक क्षेत्र में कबीर ने अद्वैतवाद को अपनाया था और सामाजिक क्षेत्र में समानता और बंधुत्व के भाव को केन्द्र में रखकर सामाजिक अद्वैत को स्वीकृति दी थी। कबीर की रचनाओं ने हिंदी प्रदेश के भक्ति आंदोलन को बहुत गहरे स्तर तक प्रभावित किया। उनका लेखन, उनके विचार सिखों के आदि-ग्रंथ में भी दृष्टिगोचर होते हैं। कबीर पंथ नामक धार्मिक संप्रदाय इनकी शिक्षाओं के अनुयायी है।

अध्याय का विहंगावलोकन

कबीर का जीवन

मध्ययुगीन हिंदी भक्त कवियों में कबीर का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है, परंतु कबीर के जीवनवृत के बारे में प्रामाणिक रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। कबीर ने स्वयं अपने जीवन के संदर्भ में कभी कुछ विशेष रूप से नहीं कहा। उनके दोहों, साखियों में कहीं-कहीं कुछ छुटपुट उल्लेख मिलता है, जोकि अपर्याप्त माना जा सकता है। कबीर के समकालीन और थोड़े परवर्ती कवियों ने, उनके भक्तों ने तथा कबीर पंथ के श्रदालुओं ने उनके विषय में जो कहा है, वह भी किंवदंतियों, अलौकिक घटनाओं से परिपूर्ण प्रशंसात्मक टिप्पणियां मानी जा सकती हैं।

1. प्रशस्तियां–उनके समकालीन कवियों में संत रैदास, पीपा, सेन आदि ने उनके विषय में कुछ उक्तियाँ लिखी हैं। दाद् दयाल (1544-1603) पर कबीर के जीवन और साधना का गहरा प्रभाव दिखाई देता है; जैसे–

हरि रस लागे ना दे, पीपा अरु रैदास।
पीवत कबीरा नाथ क्या, आजहूँ प्रेम पियास।

इसके अतिरिक्त रज्जब, मलूकदास, धर्मदास, नाभादास आदि की लेखनी में भी कबीर के आदर्शों और विचारों की स्पष्ट छाप दिखाई देती है।

कबीर की जन्मतिथि और जन्म स्थान के विषय में विद्वानों ने काफी मतभेद है। कुछ विद्वान कबीर का जन्म संवत् 1455 मानते है, तो कुछ 1456, परंतु किसी भी तिथि के विषय में कोई भी ठोस प्रमाण नहीं है। किंवदंतियों, जनश्रुतियों, दोहों के आधार पर कबीर की जन्म तिथि 1455 या उसके आस-पास ही मानी जा सकती है। कबीर के जन्म स्थान को लेकर भी पर्याप्त मतभेद है, किंतु अधिकतर विद्वान इनका जन्म स्थान 'काशी' ही मानते हैं, जिसकी पुष्टि स्वयं कबीर का यह कथन भी करता है–

"काशी में परगट भए, रामानंद चेताए।"

2. जन्मतिथि और जन्मस्थान–जनश्रुतियां भी काशी के पक्ष में ही है।

जन्मतिथि, जन्मस्थान के साथ-साथ कबीर के परिवार के विषय में भी कुछ प्रामाणिक रूप से नहीं कहा जा सकता। उन्होंने अपने पदों और साखियों में 'राम' के साथ ही अपने हर संबंध को उद्धृत किया है।

3. परिवार : माता-पिता–प्रचलित किंवदंतियों और जनश्रुतियों के आधार पर कबीर को एक गरीब जुलाहा दंपत्ति नीरु-नीमा का पालित पुत्र माना जाता है। पंडित रामचन्द्र शुक्ल, पं. हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे विद्वान भी इन्हीं जनश्रुतियों का अनुकरण करते हैं। कबीर के नामकरण के विषय में भी एक जनश्रुति है कि उनके माता-पिता ने एक मौलवी के पास जाकर उनका नामकरण किया इस प्रकार शायद जन्म के साथ ही वो किसी एक धर्म के बंधन में नहीं बंधे। उनके पारिवारिक परिवेश ने उनके व्यक्तित्व में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

4. विवाह, पत्नी और संतान–कबीर के अनुयायी कबीर को अविवाहित, त्यागी, गृहस्थ संत मानते हैं, किंतु कुछ जनश्रुतियां कबीर के विवाहित होने और संतान होने का भी समर्थन करती हैं। स्वयं कबीर के एक आत्म-कथ्य में ऐसा आभास मिलता है–

सहजै सहजै सब गये, सुत बित कांमणि काम।
एकमेक ह्वै मिलि रह्या दास कबीरा राम।

कबीर की इस साखी को भक्ति प्रेरक मुहावरा भी माना जा सकता है, लेकिन यदि इसे सत्य माना जाए तो उनके गृहस्थ होने का संकेत मिलता है। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में भी कुछ इसी तरह के 'सलोग' भी मिलते हैं।

5. शिक्षा-दीक्षा और शिष्य परंपरा–शिक्षा और ज्ञानार्जन की दो परंपराएँ रही हैं–एक श्रुति ज्ञान परंपरा और दूसरी पुस्तकीय ज्ञान परंपरा। सामान्यत: सभी विद्वान अनुयायी कबीर को पारंपरिक शिक्षा की दृष्टि से अनपढ़ मानते हैं। उन्होंने जो भी ज्ञान अर्जन किया, वह सत्संगति से और लोक-जीवन से जुड़कर किया।

"पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय।"
"तू कहता कागद की लेखी, हौं कहता आंखिन की देखी।"

उनके ये प्रसिद्ध कथन स्वयं इस तथ्य के प्रमाण हैं कि कबीर का महत्त्व पोथी ज्ञान और लेखन के कारण नहीं, अपितु मुख वचन या 'शब्द साधना' के कारण है।

'मसि कागद छुओ नहीं, कलम गहि नहिं हाथ।
चारों जुग को महातम, कबीर मुखहिं जनाई बात।

कबीर ने अपने जीवन में गुरु को सर्वोपरि स्थान दिया है। वे शास्त्र की अपेक्षा सद्गुरु के शब्द को ही सबसे बड़ा प्रमाण मानते थे। उन्होंने गुरु को ईश्वर के समान माना है। जनश्रुतियों और कबीर पंथ के अनुयायियों ने रामानंद को कबीर का गुरु माना है। स्वयं कबीर का कथन इसकी पुष्टि करता है–

"काशी में हम प्रकट भए, रामानंद चेताये।
"सद्गुरु के परताप से मिटि गयौ सब दुख-दंद।
कह कबीर दुबिधा मिटि, गुरु मिलिया रामानन्द।"

कबीर के समसामायिक संतों और कवियों के साथ आधुनिक हिंदी विद्वानों का एक बहुत बड़ा वर्ग भी रामानंद को कबीर के गुरु के रूप में मान्यता देता है।

कबीर ने स्वयं किसी को अपना शिष्य नहीं बनाया, किंतु उनके विचारों, उनके चिंतन, उनकी लोक-चेतना से प्रभावित होकर उनकी स्वयं ही एक शिष्य परंपरा बन गई, जिसमें कमाल, पद्मनाभ, धर्मदास, रामकृपाल, नीर, धीर, तत्वा, जीवा, जागूदास, मलूकदास, गरीबदास आदि प्रमुख माने जाते हैं।

6. मृत्यु, मृत्युस्थान और उससे सम्बद्ध घटनाएं–कबीर की यह दृढ़ मान्यता थी कि मनुष्य को उसके कार्यों के अनुसार ही गति मिलती है, किसी स्थान विशेष के कारण नहीं। अपनी इसी मान्यता को सिद्ध करने के लिए अंत समय में वे 'मगहर' चले गये, क्योंकि उस समय लोगों का यह मानना था कि 'काशी' में मरने पर स्वर्ग और 'मगहर' में मरने पर नरक मिलता है। उन्होंने संवत् 1575 के आस-पास 'मगहर' में अंतिम सांस ली। आज भी वहाँ उनकी समाधि स्थित है।

कबीर का साहित्य

कबीर का पूरा जीवन मध्ययुगीन भारतीय समाज व्यवस्था की अमानवीय विसंगति और विडम्बना का जीता-जागता उदाहरण है। कबीर उन लोगों में से थे, जो नग्ण्य परिवेश में पालित-पोषित होकर भी अपने असाधारण कर्म से, लोक-कल्याण की भावना से, अपने पुरुषार्थ से एक इतिहासपुरुष बन गये। जिस प्रकार उनके जीवन-वृत्त के विषय में प्रामाणिक रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता, यही स्थिति उनके साहित्य की भी है। कबीर का यह अंत: साक्ष्य 'मसि कागद छुओ नहीं' इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने जो कुछ कहा, वह मौखिक ही था। उन्होंने स्वयं उनका लेखन-संपादन नहीं किया था। कबीर वाणी को लिखित रूप उनके पंथ और पंथेतर श्रद्धालुओं ने दिया और वे अलग-अलग भाषा और क्षेत्रों के थे। इसी कारण कबीर साहित्य अलग-अलग बोलियों और भाषाओं में संगृहीत है, जिसमें मुख्य रूप से राजस्थानी, पंजाबी और पूर्वी पाठ हैं। पर इनमें से कोई भी पाठ कबीर की मूल भाषा का प्रतिनिधित्व नहीं करता। केवल इतना ही कहा जा सकता है कि मध्यकाल में काशी-मगहर के बीच बोलचाल की भाषा ही कबीर वाणी का मुख्य आधार रही होगी। सूफियों और योगियों की संगति के कारण उनकी भाषा में खड़ापन रहा होगा। कुल मिलाकर उनकी भाषा को सधुक्कड़ी या पंचमेली भी कहा जा सकता है।

कबीर के प्रामाणिक साहित्य, उनकी संख्या का निर्धारण और उनके पाठों के चयन को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद रहा है।

(क) कबीर-साहित्य की संख्या–कबीर-साहित्य की व्यवस्थित खोज और उनकी संख्या निर्धारित करने का पहला प्रयास जी.एच. वेस्टकाट ने अपनी पुस्तक 'कबीर और कबीर पंथ' (सन् 1907) में किया। उन्होंने कबीर के 82 ग्रंथों की सूची बनाई। तत्पश्चात् मिश्र बंधुओं ने 'हिंदी नवरत्न' (सन् 1910) में 75, 'मिश्र बंधु विनोद' (सन् 1929) में 84 और डॉ. रामकुमार वर्मा ने 86 ग्रंथों की सूची दी। नागरी प्रचारिणी सभा ने यह संख्या 130 से 158 तक पहुँचा दी, परंतु विद्वानों का मानना है कि बाद की रचनाओं, जैसे–'अनुराग सागर', 'कबीर मंसूर' आदि में जिन विचारों का संग्रह है, वह कबीर के आडंबर विरोधी विचारों से मेल नहीं खाता, इसलिए इनकी प्रामाणिकता पर संदेह है।

(ख) कबीर वाणी के प्रामाणिक पाठ के प्रयत्न–कबीर वाणी के प्रामाणिक पाठ को सर्वप्रथम नागरी प्रचारिणी सभा ने अयोध्या सिंह उपाध्याय के नेतृत्व में प्रस्तुत किया। तब से लेकर अब तक इस दिशा में निरंतर प्रयास जारी है।

1. कबीर वचनावली (सन् 1916)–अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने सन् 1916 में 'कबीर वचनावली' का संपादन किया। हरिऔध जी ने 'बीजक', 'चौरासी अंग की साखी', 'कबीर शब्दावली' आदि ग्रंथों के आधार पर यह ग्रंथ तैयार किया। इसमें 781 साखियाँ एवं 228 पद शामिल हैं। इसकी प्रामाणिकता पर भी कुछ विद्वानों को संदेह है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

2. कबीर ग्रंथावली (सन् 1928)–कबीर के प्रामाणिक पाठ का दूसरा प्रयत्न सन् 1928 में श्यामसुंदर दास ने 'कबीर ग्रंथावली' के रूप में किया। उन्होंने दो प्राचीन हस्तप्रतिलिपियों के आधार पर यह कार्य किया। इसमें कुछ 809 साखियों, 400 पदों और रमैनियों को सम्मिलित किया गया है। यह कबीर का पूर्ण प्रामाणिक पाठ तो नहीं कहा जा सकता, परंतु इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास अवश्य माना जा सकता है।

3. संत कबीर (सन् 1943)–डॉ. रामकुमार वर्मा ने 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित कबीर की वाणी पर 'संत कबीर' नाम की स्वतंत्र पुस्तक सन् 1943 में संपादित की। उन्होंने कबीर वाणी पर पूर्व प्रकाशित अनेक पुस्तकों की प्रामाणिकता को संदेहास्पद मानते हुए 'गुरुग्रंथ साहिब' के पाठ को सर्वाधिक विश्वनीय और प्रामाणिक माना है। कबीर की भाषा पर पूर्वी प्रभाव के साथ-साथ इस ग्रंथ में यत्र-तत्र कबीर वाणी पर पंजाबी भाषा का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है। इसमें 234 सलोग (साखियाँ), 228 सबद (पद) संकलित है। ऐतिहासिक महत्त्व रखते हुए भी 'संत कबीर' कबीर का पूर्ण प्रामाणिक और निर्दोष पाठ नहीं माना जा सकता।

4. कबीर बानी (सन् 1965)–अली सरदार जाफरी ने सन् 1965 में कबीर वाणी के 128 छंदों का संकलन तैयार किया। इसे तैयार करने के पीछे उनका उद्देश्य हिंदी परंपरा के साथ-साथ कबीर पर इस्लामी सूफी परंपरा के प्रभाव को उजागर करना था। हिंदू-मुस्लिम एकता राष्ट्रीय भावात्मक एकता की दृष्टि से इस संस्करण का महत्त्व असंदिग्ध है, लेकिन प्रामाणिकता की दृष्टि से संदेहपूर्ण है। डॉ. शुकदेव सिंह के अनुसार कबीर के नाम पर मिलने वाली रचनाओं में एक भी ऐसी रचना नहीं है, जिसे शत-प्रतिशत प्रामाणिक कहा जा सके। मौखिक, श्रवण तथा संकलन की परंपरा कबीर के जीवनकाल में ही प्रारंभ हो गई थी, अतः उनकी सारी कृतियों में प्रक्षेप और पाठांतर स्वाभाविक है।

5. कबीर ग्रंथावली (सन् 1961)–भारतीय हिंदी परिषद्, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की ओर से सन् 1961 में डॉ. पारसनाथ तिवारी ने नए सिरे से 'कबीर ग्रंथावली' को संपादित किया। कबीर के नाम से मिलने वाली 4500 साखियों, लगभग 1600 पदों, 134 रमैनियों के गहन अध्ययन से उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि 20 पद (या सबद), 20 रमैनियां, 744 साखियां प्रामाणिक रूप से कबीर की सिद्ध होती हैं।

6. कबीर ग्रंथावली (सन् 1969)–डॉ. पारसनाथ तिवारी के निष्कर्षों पर पुनर्विचार करते हुए डॉ. माताप्रसाद गुप्त ने 'कबीर ग्रंथावली' का संपादन किया।

7. कबीर बीजक (सन् 1972)–बहुत से विद्वानों के अनुसार कबीर वाणी का सबसे पुराना और प्रामाणिक रूप बीजक है। उसी से प्रेरित होकर आधुनिक वैज्ञानिक पाठानुसंधान की प्रक्रिया अपनाते हुए डॉ. शुकदेव सिंह ने बीजक के विभिन्न संस्करणों के चार समुच्चयों–दानापुर, फतुहा, भगताही-अ, भगताही-ब का गहन तुलनात्मक अध्ययन और विश्लेषण किया। उन्होंने बीजक में 84 रमैनियों, 115 सबदों, 353 साखियों और कुछ अन्य विधाओं को प्रामाणिक मानते हुए सम्मिलित किया। निःसंदेह डॉ. शुकदेव के बीजक का महत्त्व निर्विवाद है, लेकिन सबद, साखी, रमैनी के अतिरिक्त अन्य विधाएँ, जैसे–कहरों, बेलियों, विप्रमतीसी आदि परवर्ती काव्य रूप हैं, इसलिए उनकी प्रामाणिकता संदिग्ध है।

8. कबीर वाङ्मय (खंड-1 रमैनी–1974, खंड-2 सबद-1981, खंड–3 साखी–1976)–कबीर वाङ्मय को तीन खंडों–रमैनी, सबद, साखी में संपादित और प्रकाशित डॉ. जयदेव सिंह और डॉ. वासुदेव ने किया। उन्होंने यह स्पष्ट रूप से कहा कि कबीर की वाणी पर मुख्यतः दो क्षेत्रों में लाभ हुआ है–एक साहित्यिक विद्वानों द्वारा और दूसरा कबीरपंथियों द्वारा। किंतु कोई भी ऐसा ग्रंथ नहीं है, जो कबीर के समग्र साहित्य को एक साथ उपलब्ध कराता हो, इसलिए एक ऐसे ग्रंथ की बहुत आवश्यकता थी, जिसमें कबीर का संपूर्ण साहित्य विस्तृत व्याख्या के साथ उपलब्ध हो। कबीर वाङ्मय इसी दिशा में किये गये प्रयासों का परिणाम है। डॉ. जयदेव सिंह ने 'कबीर ग्रंथावली' और 'बीजक' के बीच का रास्ता निकाला और पहले खंड में 84 रमैनियों, दूसरे खंड में 350 सबदों, परिशिष्ट-1 में 'कबीर बीजक' के अन्य काव्य रूपों, तीसरे खंड में 809 साखियों को रखा और पूर्व में जो भाषा संबंधी अशुद्धियाँ रह गई थीं, उन्हें सुधारते हुए अपेक्षाकृत अधिक प्रामाणिक पाठ देने का प्रयत्न किया। भाषा का शुद्धिकरण और पाठ का निर्धारण कबीर की भाषा को 'पूर्वी' मानकर किया गया है। इसकी विशेष उपयोगिता 'भावार्थ बोधिनी व्याख्या' के कारण है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. कबीर के जीवन का संक्षेप में परिचय दीजिए।

उत्तर–भारत में आत्मकथा, जीवन-परिचय लिखने की वैसी परम्परा नहीं रही जैसी कि पश्चिम के देशों में पायी जाती है। हमारे यहां के महापुरुष अपने विषय में कुछ भी कहने में संकोच करते रहे, क्योंकि वे उसे आत्म-प्रशंसा मानकर इस कार्य को मिथ्या गर्व या दंभ का काम समझते रहे। अतः उनके विषय में प्रामाणिक सामग्री का अभाव रहा है। जो कुछ थोड़ी-बहुत जानकारी मिलती है, वह या तो उनकी रचनाओं में यत्र-तत्र बिखरी सामग्री से, अथवा उनके समकालीन या परवर्ती लोगों द्वारा दिये गये संकेतों से। ये लोग प्रायः इन महापुरुषों के अनुयायी, श्रद्धालु भक्त तथा पंथ-सम्प्रदाय के सदस्य रहे हैं। अतः उनके द्वारा कही-लिखी गयी बातें प्रामाणिक कम हैं, उनमें अंधश्रद्धा की अभिव्यक्ति अधिक है। इन महापुरुषों को अलौकिक, परम गरिमामंडित सिद्ध करने के लिए जन-समाज में किंवदंतियां, जनश्रुतियां तथा चमत्कारपूर्ण दंतकथाएं भी प्रचलित रही हैं। अतः उनसे तथ्य प्राप्त करना उतना ही कठिन है, जितना भूसे के अम्बार से अनाज के दाने पाना।

संत कबीर के संबंध में भी यह सच है। उन्होंने अपने संबंध में बहुत कम कहा है। उनके शिष्यों, भक्तों तथा पंथानुयायियों ने उनके विषय में जो कुछ लिखा है, उसमें सत्य कम, कल्पना तथा अंध श्रद्धा-भाव अधिक है। कबीर के इन प्रशंसकों ने न केवल उनका प्रशस्ति-गान ही किया है, अपितु अपनी रचनाओं को कबीर

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

की रचनाएं बताकर उनके नाम से ऐसा साहित्य भी प्रचारित किया है, जिसे पढ़कर पाठक भ्रम में पड़ सकता है। यह साहित्य मौखिक भी है तथा लिखित भी।

कबीर का व्यक्तित्व तथा कृतित्व इतना क्रांतिकारी तथा प्रभावशाली रहा है कि उनको विभिन्न सम्प्रदायों, मतों, पंथों के लोग श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं। हिन्दू उन्हें वैष्णव भक्त मानते हैं, मुसलपान पीर कहते हैं, सिक्खों के लिए वह 'भगत' हैं और कबीरपंथी उन्हें ईश्वर का अवतार बताते हैं। नव-वेदांती उन्हें मानवधर्म-प्रवर्तक कहते हैं, तो साम्यवादी विचारधारा वाले उन्हें समाज का उत्थान करने वाले, प्रत्येक प्रकार के अत्याचार-अन्याय-शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने वाले क्रांतिकारी। समाज-सुधारकों को उनके समाज-सुधार संबंधी विचार आकृष्ट करते हैं, तो अद्वैतवादियों को उनके निर्गुण ब्रह्म, माया, संसार की क्षणभंगुरता के संबंध में विचार।

कबीर के जीवन-वृत्त के संबंध में अनेक मत है। उनकी एक काव्य-पंक्ति के अनुसार तो उनका जन्म-स्थान मगहर नामक छोटा-सा कस्बा है, जो गोरखपुर से लगभग तेरह मील दूर है तथा जहां आज भी नदी के तट पर एक समाधि बनी हुई है–

पहिले दरसन मगहर पाइयो, फुनि कासी बसे आई।

पर अधिकांश लोग उनका जन्म-स्थान काशी जनपद का लहरतारा नामक स्थान मानते हैं। **स्वामी परमानन्द दास** कृत 'कबीर मंसूर', **लहनासिंह** की पुस्तक 'कबीर कसौटी' तथा **स्वामी युगलानन्द** के चरित्रबोध उनकी जन्मभूति लहरतारा ही मानते हैं। प्रचलित दंतकथा भी यही कहती है कि मुसलमान संतान-विहीन जुलाहा दम्पति नीरू और नीमा को कबीर परित्यक्त शिशु के रूप में इसी स्थान पर तालाब के किनारे मिले थे और उन्होंने ही उनका पालन-पोषण किया था। उनका अधिकांश जीवन काशी में बीता था–

बहुत बरस तप कीया कासी।
भस भइया मगहर को वासी॥

उनकी जन्म-तिथि तथा निधन-तिथि के संबंध में भी विवाद है। केवल अनुमान लगाया गया है कि वह संवत् 1455 से लेकर संवत् 1569 तक जीवित रहे। **डॉ. माताप्रसाद गुप्त** ने धर्मदास कृत 'द्वादश पंथ' के आधार पर उनका जन्म संवत् 1455 तथा निधन संवत् 1569 माना है।

चौदह सौ पचपन साल गए, चंद्रवार एक ठाठ ठए।
समंत पंद्रह सौ उनहतरा हाई।
सतगुरु चले उठ ऊंसा जाई।

उनकी मृत्यु के संबंध में भी एक किंवदंती है कि उनके शव को लेकर हिन्दू-मुसलमानों में झगड़ा हुआ, दोनों उन का अन्तिम संस्कार अपनी-अपनी रीति से करना चाहते थे। विवाद बढ़ा तो पाया गया कि शव के स्थान पर वहां केवल फूल थे। वे बांट लिए गये और दोनों सम्प्रदायों के शिष्यों ने उन्हें अपनी-अपनी रीति से उनका संस्कार किया। जहां तक उनकी कब्र का प्रश्न है, कुछ मानते हैं कि मृत्यु से कुछ पूर्व वह जानबूझ कर काशी से मगहर आ गये थे और वहीं उनकी मृत्यु हुई और वहीं उन्हें दफनाया गया; पर कुछ मानते हैं कि उनको अयोध्या के निकट रतनपुर नामक स्थान पर दफनाया गया।

प्राय: कबीर को स्वामी रामानन्द का शिष्य बताया जाता है और इस मत की पुष्टि के लिए निम्नलिखित पंक्ति उद्धृत की जाती है।

कासी में हम प्रकट भए हैं, रामानन्द चेताये।

जनश्रुति है कि मुसलमान परिवार में पाले-पोसे जाने के कारण कबीर को वैष्णव धर्म में दीक्षित नहीं किया गया। कबीर को पता था कि स्वामी रामानन्द प्रतिदिन प्रात:काल झुटपुटे में काशी के गंगा-तट पर स्नान करने जाते हैं, अत: एक दिन वह गंगा-तट की सीढ़ियों पर लेट गये। जब स्वामी जी गंगा-स्नान के लिए सीढ़ियां उतर रहे थे, उनकी खड़ाऊं कबीर के शरीर से टकराईं ओर उनके मुख से यकायक 'राम-राम' निकल पड़ा। कबीर ने उसे ही गुरु-मंत्र मान लिया और स्वयं को रामानंद का शिष्य कहने लगे।

इस घटना का उल्लेख कई रचनाओं–'भक्त व्यास', 'कबीर साहब की परचई' तथा नाभादास के भक्तमाल' में मिलता है। परन्तु काल-गणना से यह भी केवल मनगढ़ंत घटना सिद्ध होती है। क्योंकि रामानन्द का देहावसान संवत् 1456 में हुआ था और तब कबीर की आयु केवल 12 वर्ष की हो सकती है। इतनी छोटी आयु में दीक्षा की बात विश्वसनीय नहीं लगती। इसके विपरीत **मौलाना गुलाम सरवर** ने अपने ग्रंथ 'खजीनतुल असफिया' में शेख तकी को उनका गुरु बताया है। 'कबीर बीजक' में भी एक पंक्ति है–

मानिकपूर कबीर बसेरी, मदहति सुनी शेख तकि केरी।

अत: लगता है कि कबीर के गुरु शेख तकी ही थे। कबीर ने हृदय से भक्त तथा मनोवृत्ति से सांसारिक माया जाल से विरक्त होते हुए भी अपना जीवन एक सद्गृहस्थ के रूप में बिताया। वह संन्यासी या विरक्त साधु न बने; पारिवारिक जुलाहे का पेशा अपनाया, करघे पर वस्त्र बुनते रहे और वस्त्र बुनते-बुनते ही काव्य-रचना करते रहे। उन्होंने विवाह किया, कुछ लोगों के अनुसार उनके एक नहीं अधिक पत्नियां थीं। उनकी पत्नियों के नाम भी बताये गये हैं–लोई, रमजनिया, धनिया। गुरुग्रंथ साहब में पंक्तियां हैं–

मेरी बहुरिया को धनिया नाउ
लै राखिओ रामजनिया नाउ।

हो सकता है कि इस धनिया या रमजनिया से कबीर के स्वभाव का मेल न हो पाया हो और उन्होंने लोई नामक युवती से विवाह किया हो। पर अब कबीर को लोई का ही पति माना जाता है तथा कहा जाता है कि उससे उनके एक पुत्र कमाल तथा एक बेटी कमाली हुए। इस संबंध में एक पंक्ति भी है–

बूड़ा वंश कबीर का, उपजा पूत कमाल।

व्यक्तित्व–शरीराकृति की दृष्टि से कबीर का व्यक्तित्व प्रभावशाली, रौबीला या भव्य नहीं था। उनके जो चित्र प्राप्त हैं उनसे लगता है कि वह मंझले कद के, साधारण शरीर वाले व्यक्ति थे, उनका चेहरा लम्बा था। वह अनपढ़ थे, उनकी पोथी-ज्ञान में आस्था भी नहीं थी–

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com